International Journal of Pedagogy, Health and Management research

e - ISSN - 3107-8389

Volume 2 Issue 1
June. 2026

Page No. 19 - 23

DOI 10.5281/zenodo.21266767.

उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, सृजनात्मकता के संबंध में शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन

Corresponding Author-
Dr. Divya Trivedi

Affiliation -
Principal, Victoria College of Education, Sehore, Madhya Pradesh, India

Contact No.- +919893503464
Email Address-
trivedidivya10@gmail.com

Received on 18/05/2026
Accepted on 30/05/2026
Published on 30/06/2026

सारांश (Abstract)

प्रस्तुत शोध पत्र भोपाल जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सृजनात्मकता के स्तर का अध्ययन करता है तथा इन मानसिक गुणों और विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य संबंध का विश्लेषण करता है। शोध हेतु 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक चयन कर उनके मानसिक गुणों का परीक्षण किया गया। आँकड़ों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता का शैक्षणिक उपलब्धि से सर्वाधिक सकारात्मक सहसंबंध है, जबकि आलोचनात्मक सोच एवं सृजनात्मकता भी मध्यम स्तर के सहसंबंध प्रदर्शित करती है। इसके अतिरिक्त, निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में इन गुणों का स्तर तुलनात्मक रूप से अधिक पाया गया। यह अध्ययन स्पष्ट करता है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता के लिए केवल बौद्धिक ज्ञान ही नहीं, अपितु भावनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं का विकास भी अनिवार्य है।

Keywords: आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, रचनात्मकता, शैक्षिक उपलब्धि, उच्च माध्यमिक छात्र, भोपाल जिला

1. प्रस्तावना (Introduction)

वर्तमान शैक्षणिक परिदृश्य में विद्यार्थियों की सफलता का मूल्यांकन केवल परीक्षा अंकों के आधार पर करना पर्याप्त नहीं है। वैश्विक स्तर पर शिक्षा का उद्देश्य अब केवल विषय-ज्ञान तक सीमित नहीं रहा; अपितु यह विद्यार्थियों की समग्र बौद्धिक, भावनात्मक एवं सृजनात्मक क्षमताओं के विकास पर केंद्रित हो गया है। इस संदर्भ में आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सृजनात्मकता जैसे तत्त्व अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो जाते हैं।

आलोचनात्मक सोच वह योग्यता है जिसके द्वारा विद्यार्थी सूचनाओं का विश्लेषण कर निष्कर्ष पर पहुँच सकते हैं। यह निर्णय लेने की क्षमता को भी प्रभावित करती है तथा समस्याओं के समाधान में सहायक होती है। भावनात्मक बुद्धिमत्ता, जो कि व्यक्ति की अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने, नियंत्रित करने और प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने की क्षमता है, विद्यार्थियों को आत्म-प्रबंधन, सहानुभूति एवं सामाजिक कौशल विकसित करने में सहायता करती है। इसके साथ ही सृजनात्मकता नवीन विचारों को जन्म देने की क्षमता है, जो विद्यार्थियों को शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार एवं समाधान खोजने की दिशा में प्रेरित करती है।

भोपाल जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का मूल्यांकन करते समय इन तीन मानसिक क्षमताओं का आकलन भी इसलिए आवश्यक है क्योंकि यह उन्हें उनके समग्र विकास एवं प्रतिस्पर्धी परिवेश में सफलता प्राप्त करने हेतु मार्गदर्शक बन सकता है।

यह शोध पत्र विशेष रूप से यह जानने का प्रयास करता है कि इन तीन मनोवैज्ञानिक गुणों का विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि पर क्या प्रभाव पड़ता है। इसके साथ ही यह भी परीक्षण किया गया है कि सरकारी एवं निजी विद्यालयों के संदर्भ में इन क्षमताओं में किस प्रकार का अंतर पाया जाता है।

2. साहित्य समीक्षा (Review of Literature)

शैक्षिक शोध में पाया गया है कि विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि केवल बौद्धिक क्षमताओं पर निर्भर नहीं करती; अपितु मानसिक, भावनात्मक एवं सृजनात्मक कारक भी उसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

एनिस (Ennis, 1993) ने आलोचनात्मक सोच को एक सक्रिय, लक्ष्योन्मुख प्रक्रिया के रूप में परिभाषित किया जो विद्यार्थियों को तार्किक निष्कर्ष तक पहुँचने में सहायता करती है। उनका मानना था कि आलोचनात्मक सोच शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करती है तथा जटिल समस्याओं के समाधान में सहायक होती है।

गोलमन (Goleman, 1995) ने भावनात्मक बुद्धिमत्ता की अवधारणा प्रस्तुत की जिसमें आत्म-जागरूकता, आत्म-नियंत्रण, सामाजिक कौशल, सहानुभूति एवं अभिप्रेरण जैसे घटक सम्मिलित हैं। उनके अनुसार भावनात्मक रूप से बुद्धिमान व्यक्ति अपने व्यवहार को नियंत्रित करने तथा सामाजिक संबंधों को सफलतापूर्वक प्रबंधित करने में सक्षम होते हैं, जो शैक्षणिक प्रदर्शन को सकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

टोरेंस (Torrance, 1974) ने सृजनात्मकता को प्रवाह, मौलिकता, लचीलापन एवं विस्तार जैसे कारकों के केंद्र में रखकर मापा। उनका निष्कर्ष था कि सृजनात्मकता केवल कला से संबंधित नहीं है, अपितु यह विद्यार्थियों को विभिन्न दृष्टिकोणों से सोचने एवं नवाचार करने में सक्षम बनाती है।

यादव (2017) ने अपने भारतीय शोध में कहा कि आलोचनात्मक सोच के विकास से विद्यार्थियों की समस्या-समाधान क्षमता और आत्मविश्वास में वृद्धि होती है, जो अंततः उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में योगदान देती है। इसी प्रकार शर्मा (2019) ने सिद्ध किया कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों को तनाव प्रबंधन, समय प्रबंधन एवं सहकारी कार्यों में बेहतर बनाती है।

ये अध्ययन यह स्पष्ट करते हैं कि आलोचनात्मक सोच, भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं सृजनात्मकता विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता को प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। भोपाल जिले के संदर्भ में इस विषय पर सीमित शोध उपलब्ध है, अतः यह अध्ययन स्थानीय शैक्षणिक संरचना को समझने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

3. अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Study)

विद्यार्थियों में आलोचनात्मक सोच के स्तर का मूल्यांकन करना।

भावनात्मक बुद्धिमत्ता की उपस्थिति को समझना।

सृजनात्मकता के स्तर का अध्ययन करना।

उपरोक्त तीनों तत्त्वों का शैक्षणिक उपलब्धि से संबंध ज्ञात करना।

4. शोध परिकल्पनाएँ (Research Hypotheses)

H_{01}: विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच और उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

H_{02}: भावनात्मक बुद्धिमत्ता और शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं है।

5. शोध विधि (Research Methodology)

यह अध्ययन वर्णनात्मक एवं सह-संबंधात्मक शोध पद्धति पर आधारित है। भोपाल जिले के पाँच सरकारी एवं पाँच निजी उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों से कक्षा 11वीं एवं 12वीं के 200 विद्यार्थियों का यादृच्छिक नमूना चयन किया गया। आँकड़ा संग्रहण हेतु निम्नलिखित उपकरणों का उपयोग किया गया:

आलोचनात्मक सोच मापनी (Ennis & Angel, 1993 पर आधारित)

भावनात्मक बुद्धिमत्ता प्रश्नावली (गोलमन के सिद्धांत पर आधारित)

सृजनात्मकता परीक्षण (Torrance Tests of Creative Thinking)

शैक्षणिक उपलब्धि – पूर्व शैक्षणिक वर्ष की अंकसूची

6. आँकड़ा विश्लेषण एवं व्याख्या (Data Analysis and Interpretation)

तालिका 1 – आलोचनात्मक सोच एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

क्र.सं.	चर (Variable)	माध्य (Mean)	मा.वि. (S.D.)	सहसंबंध (r)	व्याख्या
1	Critical Thinking	65.05	8.42	0.54	Moderate Positive
2	Educational Achievement	66.45	9.18	—	—

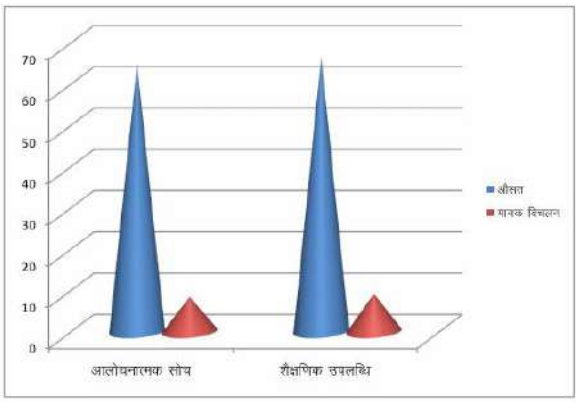

व्याख्या: तालिका 1 से ज्ञात होता है कि आलोचनात्मक सोच एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य मध्यम सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.54) है, जो यह इंगित करता है कि विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच क्षमता बढ़ने के साथ उनकी शैक्षणिक उपलब्धि में भी तुलनात्मक सुधार होता है। यह सहसंबंध सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक है जो पुष्टि करता है कि आलोचनात्मक सोच शैक्षणिक सफलता में सहायक भूमिका निभाती है।

तालिका 2 – भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

International Journal of Pedagogy, Health and Management Research
(IJPHMR) e- ISSN- 31078389

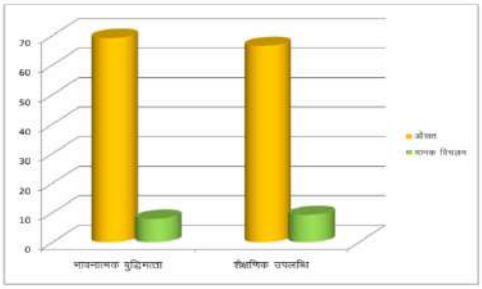

व्याख्या: तालिका 2 से ज्ञात होता है कि भावनात्मक

क्र.सं.	चर (Variable)	माध्य (Mean)	मा.वि. (S.D.)	सहसंबंध (r)	व्याख्या
1	Emotional Intelligence	69.10	7.85	0.67	High Positive
2	Educational Achievement	66.45	9.18	—	—

बुद्धिमत्ता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य उच्च सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.67) है। इसका तात्पर्य है कि उच्च भावनात्मक बुद्धिमत्ता वाले विद्यार्थी शैक्षणिक प्रदर्शन में भी सुधार प्रदर्शित करते हैं। भावनात्मक नियंत्रण, आत्म-जागरूकता एवं सहानुभूति जैसे गुण

विद्यार्थियों को तनाव से निपटने और प्रभावी ढंग से अध्ययन करने में सहायता करते हैं।

तालिका 3 – सृजनात्मकता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध

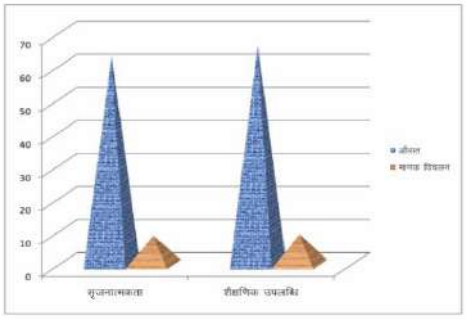

व्याख्या: तालिका 3 के अनुसार सृजनात्मकता एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य मध्यम सकारात्मक सहसंबंध (r = 0.49) पाया गया। यह इंगित करता है कि विद्यार्थियों की सृजनात्मक क्षमता – जैसे मौलिक सोच, लचीलापन एवं नवाचार की प्रवृत्ति – उनकी शैक्षणिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इस सहसंबंध की सांख्यिकीय सार्थकता दर्शाती है कि सृजनात्मकता के विकास से विद्यार्थियों के समग्र शैक्षणिक प्रदर्शन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

तालिका 4 – सरकारी एवं निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के औसत अंकों का तुलनात्मक विश्लेषण

चर (Variable)	सरकारी विद्यालय (माध्य)	निजी विद्यालय (माध्य)
Critical Thinking	61.2	68.9
Emotional Intelligence	65.4	72.7
Creativity	58.6	66.3
Educational Achievement	62.8	70.1

क्र.सं.	चर (Variable)	माध्य (Mean)	मा.वि. (S.D.)	सहसंबंध (r)	व्याख्या
1	Creativity	63.25	8.76	0.49	Moderate Positive
2	Educational Achievement	66.45	9.18	—	—

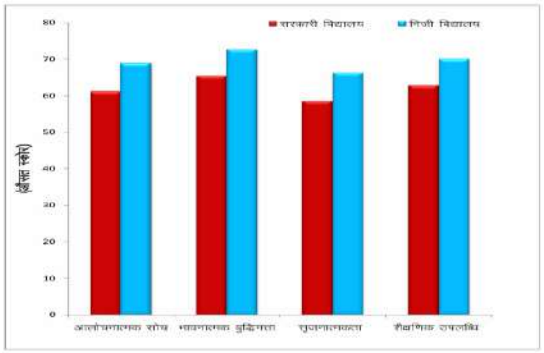

व्याख्या: तालिका 4 से स्पष्ट होता है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों ने सभी चार मापित चरों में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक अंक प्राप्त किए। आलोचनात्मक सोच: 68.9 बनाम 61.2; भावनात्मक बुद्धिमत्ता: 72.7 बनाम 65.4; सृजनात्मकता: 66.3 बनाम 58.6; शैक्षणिक उपलब्धि: 70.1 बनाम 62.8। यह इंगित करता है कि निजी विद्यालयों में विश्लेषणात्मक, भावनात्मक

एवं सृजनात्मक सोच के विकास के तुलनात्मक रूप से बेहतर अवसर उपलब्ध होते हैं और इसका शैक्षणिक परिणामों पर सीधा सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

7. परिकल्पनाओं का परीक्षण (Testing of Hypotheses)

तालिका 1 के अनुसार सहसंबंध गुणांक (r) = 0.54, $p < 0.01$, जो आलोचनात्मक सोच एवं शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य मध्यम सकारात्मक एवं सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक सहसंबंध प्रदर्शित करता है। अतः **शून्य परिकल्पना H_{01} अस्वीकृत की जाती है।** अर्थात् विद्यार्थियों की आलोचनात्मक सोच एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य सकारात्मक संबंध है।

तालिका 2 के अनुसार सहसंबंध गुणांक (r) = 0.67, $p < 0.01$, जो उच्च सकारात्मक एवं अत्यंत सांख्यिकीय दृष्टि से सार्थक सहसंबंध प्रदर्शित करता है। अतः **शून्य परिकल्पना H_{02} अस्वीकृत की जाती है।** अर्थात् विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धिमत्ता एवं उनकी शैक्षणिक उपलब्धि के मध्य प्रबल सकारात्मक संबंध है।

8. निष्कर्ष (Conclusions)

शोध के निष्कर्षों से स्पष्ट है कि भावनात्मक बुद्धिमत्ता विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता में सर्वाधिक प्रभावशाली कारक है, जबकि आलोचनात्मक सोच एवं सृजनात्मकता भी महत्त्वपूर्ण योगदानकारी भूमिका निभाती हैं। विशेष रूप से निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों में तीनों कारकों का स्तर तुलनात्मक रूप से अधिक पाया गया। शिक्षकों एवं अभिभावकों को विद्यार्थियों में भावनात्मक परिपक्वता, तार्किक सोच एवं नवीन विचारों को प्रोत्साहित करने हेतु अनुकूल वातावरण प्रदान करना चाहिए। यह शोध इंगित करता है कि इन कौशलों के विकास से विद्यार्थियों की शैक्षणिक सफलता सुनिश्चित की जा सकती है।

9. सुझाव (Suggestions)

1. पाठ्यक्रम में जीवन कौशल आधारित शिक्षण को सम्मिलित किया जाना चाहिए।
2. शिक्षकों हेतु विशेष प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया जाना चाहिए।
3. विद्यालयों में सृजनात्मक गतिविधियों को प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए।

9. संदर्भ ग्रंथ सूची (References)

1. Ennis, R. H. (1993). Critical Thinking Across the Curriculum. Prentice Hall.
2. Goleman, Daniel (1995). Emotional Intelligence. Bantam Books.
3. Torrance, E. P. (1974). Torrance Tests of Creative Thinking. Scholastic Testing Service.
4. यादव, एस. (2017). आधुनिक शिक्षा शास्त्र। मेरठ: रंजन प्रकाशन।
5. शर्मा, के. (2019). मानसिक प्रक्रिया एवं बौद्धिक विकास। दिल्ली: विनोद पुस्तक मंदिर।